1 अध्याय

मध्य प्रदेश का प्राचीन इतिहास

- डिंडोरी के **घुघुआ राष्ट्रीय उद्यान** में मिले 6.5 करोड़ वर्ष पुराने जीवाश्म ने साबित कर दिया कि मध्य प्रदेश की भूमि उतनी ही प्राचीन है जितनी की दुनिया ।
- धार के बाग इलाके में 100 से ज्यादा **डायनासोर के अण्डों के जीवाश्म** मिले है।
  - वैज्ञानिकों ने इन जीवाश्मों के लगभग 7 करोड़ से 6.5 करोड़ वर्ष पुराने होने का अनुमान लगाया है। अंडे के अलावा, क्षेत्र में **डायनासोर के घोंसलों के जीवाश्म** भी पाए गए हैं।
- वर्ष 2003 में एक अमेरिकी वैज्ञानिक ने एक विशाल डायनासोर के जीवाश्म की पहचान की थी, जिसे **"राजसौरस नर्मडेन्सिस"** नाम दिया गया था।
- सन् 1930 में **प्रोफेसर लैडकर** ने साबित किया कि मध्यप्रदेश जुरासिक काल की भूमि है, 1877 ई. में उन्हें जबलपुर के पास **टाइटेनोसॉर डायनासोर** का जीवाश्म मिला।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी **विलियम स्लीमैन** को जबलपुर छावनी क्षेत्र में हजारों हड्डियाँ मिली।
- सन् 1933 में, **मैटली** ने जबलपुर के पास मानव आकार के डायनासोर प्राप्त किये और इनका नाम **जबलपुरिया** रखा।
- भूवैज्ञानिक दृष्टि से, मध्यप्रदेश **गोंडवाना भूमि** का एक भाग है।

मध्यप्रदेश में पाषाण युग (40 लाख ईसा पूर्व से 4000 ईसा पूर्व)

प्रागैतिहासिक काल

- प्रागैतिहासिक काल- कोई लिखित साक्ष्य नहीं।
- जानकारी का मुख्य स्रोत- पुरातात्विक उत्खनन।
- भूवैज्ञानिक युग, पत्थर के औजारों के प्रकार एवं प्रौद्योगिकी तथा निर्वाह आधार के आधार पर मध्य प्रदेश के पाषाण युग को निम्न में विभाजित किया गया है-
  - **पुरापाषाण युग** (पुराना पाषाण युग): अवधि - 10, 00,000 - 10,000 ईसा पूर्व
  - **मेसोलिथिक युग** (उत्तर पाषाण युग): अवधि - 10,000 - 6000 ईसा पूर्व
  - **नवपाषाण युग** (नव पाषाण युग): अवधि - 6000 - 1000 ईसा पूर्व

पुरापाषाण युग (पुराना पाषाण युग)

- "पुरापाषाण" शब्द 1865 ई. में **जॉन लब्बॉक** द्वारा गढ़ा गया था।
- क्वार्टजाइट से बने पत्थर के औजारों की प्राप्ति के कारण भारत में मानव को **'क्वार्टजाइट' मानव** कहा जाता था।
- वे भोजन संग्राहक और शिकारी थे।
- घरों,मृदभांडों या कृषि का कोई ज्ञान नहीं।
- बाद के काल में उन्होंने आग की खोज की।

मध्यप्रदेश में पुरापाषाणिक स्थल

- नरसिंहपुर के पास भूतरा गाँव में वैज्ञानिको को पुरापाषाण युग का हथियार मिला जो मध्यप्रदेश में सबसे पुराना माना जाता है।
- बेतवा और नर्मदा की घाटी से मिली क्वार्टजाइट से बनी हाथ की कुल्हाड़ी।
- नर्मदा घाटी सर्वेक्षण में नरसिंहपुर के होशंगाबाद में प्राचीन जीवाश्म मिले हैं।
- हथनोरा में मानव **नर्मदे नूर्नमेडिस की खोपड़ी** मिली है।
- चंबल घाटी में मंदसौर
- भीमबेटका (रायसेन): विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा खोजा गया।

मध्यपाषाण काल (मध्य पाषाण युग)

MPPSC Pre - 2020

- ग्रीक शब्दों से व्युत्पन्न - 'मेसो' और 'लिथिक'। उर्फ 'मध्य पाषाण युग'
- होलोसीन युग के थे।
- पालतू बनाया जाने वाला प्रथम जानवर - कुत्ते का जंगली पूर्वज।
- भेड़ और बकरियां- सबसे आम पालतू जानवर।
- गुफाओं और खुले मैदानों पर कब्ज़ा करने के साथ-साथ अर्ध-स्थायी बस्तियों में रहते थे।
- वे **मृत्युपरांत जीवन में विश्वास** करते थे और इसलिए मृतकों को खाद्य पदार्थों और अन्य सामानों के साथ दफनाया जाता था।
- लोगों ने जानवरों की खाल से बने कपड़े पहनना शुरू कर दिया।

Unleash the topper in you

मौर्योत्तर काल

शुंग राजवंश

- **मालविकाग्निमित्रम** के अनुसार, अग्निमित्र ने विदिशा पर अपने पिता पुष्यमित्र शुंग के प्रतिनिधि के रूप में शासन किया था।
- शुंगों के पूर्वज उज्जैन से आये थे। MPPSC Pre - 2018
- राजा भागवत के शासन के दौरान, **हेलियोडोरस** (तक्षशिला के यवन राजा एण्टिआल्कीडस (लगभग 140-130 ई. पू.) का दूत) विदिशा आए और गरुड़ स्तम्भ की स्थापना की यह स्थानीय रूप से **खाम बाबा** के नाम से जाना जाता है।
- भरहुत स्तूप (सतना) शुंग काल के दौरान निर्मित।
- इस दौरान सांची की बाहरी दीवार भी बनाई गई थी।

सातवाहन राजवंश

- सातवाहनों ने कण्व वंश को समाप्त करने से पहले 27 ईसा पूर्व में शासन किया था।
- सांची स्तूप की वेदिका पर उत्कीर्ण अभिलेख से मालवा पर शातकर्णी से पहले के शासन से संबंधित सूचना मिलती है।
- कुछ सातवाहन सिक्के **देवास**, **उज्जैन**, **जमुलिया**, **तेवर**, **भेड़ाघाट** से प्राप्त हुए हैं।
- पुराणों के अनुसार, सिमुक ने पूर्वी मालवा (विदिशा) क्षेत्र पर शासन करने वाले कण्वों और शुंगों की शक्ति को समाप्त करके सातवाहन वंश की स्थापना की।
- शातकर्णी के राज्यों में अनूप (निमाड़), आकर (पूर्वी मालवा) और अवंती (पश्चिम मालवा) शामिल थे।
- सातवाहन का अभिलेख मध्यप्रदेश के सांची से प्राप्त हुआ है।
- उसके पुत्र पुलुमावी की कर्दमन वंश (सीथियन राजवंश) से हार हुई।
- **शातकर्णी प्रथम** को सातवाहन वंश का सबसे शक्तिशाली राजा माना जाता है।

इंडो-यूनानी शासक 200 ईसा पूर्व से 50 ईसा पूर्व तक

- डेमेट्रियस के उत्तराधिकारी, **मिनांडर** (मिलिंद) ने मध्यप्रदेश पर हमला किया इसकी जानकारी उसके बालाघाट के सिक्कों से मिलती है।
- **नागसेन** ने उसे बौद्ध धर्म में परिवर्तित कर दिया।

शक शासन

- शकों ने भारत के पश्चिमी भाग से इंडो-यूनानी शासन की जगह ली और 4 क्षत्रपों अर्थात् पंजाब, मथुरा, उज्जैन और नासिक की स्थापना की।
- शकों की संयुक्त शासन प्रणाली में एक परंपरा थी कि वरिष्ठ शासक "**महाक्षत्रिय**" की उपाधि धारण करता था और अन्य कनिष्ठ शासकों को "**क्षत्रिय**" कहा जाता था।

उज्जैनी क्षत्रप (कर्दमक वंश)

- चष्टन द्वारा स्थापित और बाद में रुद्रदामन द्वारा शासित।
- चष्टन वंश का सबसे शक्तिशाली शासक **नहपान** था।
- वह सातवाहन राजा गौतमी पुत्र शातकर्णी के समकालीन थे।
- चंद्रगुप्त 'विक्रमादित्य' द्वारा अंतिम कर्दमक राजा रुद्रसेन की हत्या की गई थी।

- **यह सागर, सतना और दमोह जिले** में पायी जाती है ।

c) रीवा सीरीज

- **खनिज:** बलुआ पत्थर, चूना पत्थर, हीरा
- यह सागर, दमोह जिले में पायी जाती है ।

5. गोंडवाना चट्टानें

- यह कार्बोनिफेरस और जुरासिक काल के बीच निर्मित हैं।
- पर्मो-कार्बोनिफेरस समय में जमा हुई जलीय चट्टानों का एक अनूठा अनुक्रम बनाती है ।
- इसे हम निम्न गोंडवाना चट्टानों और उच्च गोंडवाना चट्टानों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

A. निम्न गोंडवाना चट्टानें

a) तालचेर श्रृंखला

- यहाँ **कोयले का सबसे बड़ा भंडार** है
- **खनिज**: कोयला
- यह सीधी, सीधी और शहडोल जिलों में पायी जाती है ।

B. उच्च गोंडवाना चट्टानें

a) महादेव श्रृंखला

- इसमें **कोयले का भण्डार प्रचुर मात्रा** में पाए जाते है।
- यह सीधी जिले में पायी जाती है ।

b) जबलपुर श्रृंखला

- यहां **जुरासिक काल के अवशेष** मिलते हैं
- खनिज: चूना पत्थर, बलुआ पत्थर
- यह सीधी, शहडोल जिले में पायी जाती है ।

6. क्वाटरनेरी चट्टानें

- यह नदियों के तलछटी निक्षेपों से निर्मित है ।
- यह नर्मदा, ताप्ती नदी की घाटी में पायी जाती है ।
- यहां धजरी, सिगार पर्वत श्रृंखला स्थित है।

मध्य प्रदेश का भौगोलिक संभाग

- अविभाजित मध्य प्रदेश में 9 फिजियोग्राफिक डिवीजन थे, जबकि अब तक, मध्य प्रदेश में 3 भौगोलिक संभाग हैं।
- मध्य प्रदेश के सात प्राकृतिक विभाजन हैं

1. **केन्द्रीय उच्च भूमि**
   a) मध्य भारत का पठार
   b) रीवा-पन्ना पठार
   c) नर्मदा-सोन घाटी
   d) बुन्देलखण्ड पठार
   e) मालवा का पठार
2. **सतपुड़ा मैकाल श्रेणी**
3. **बघेलखंड पठार**

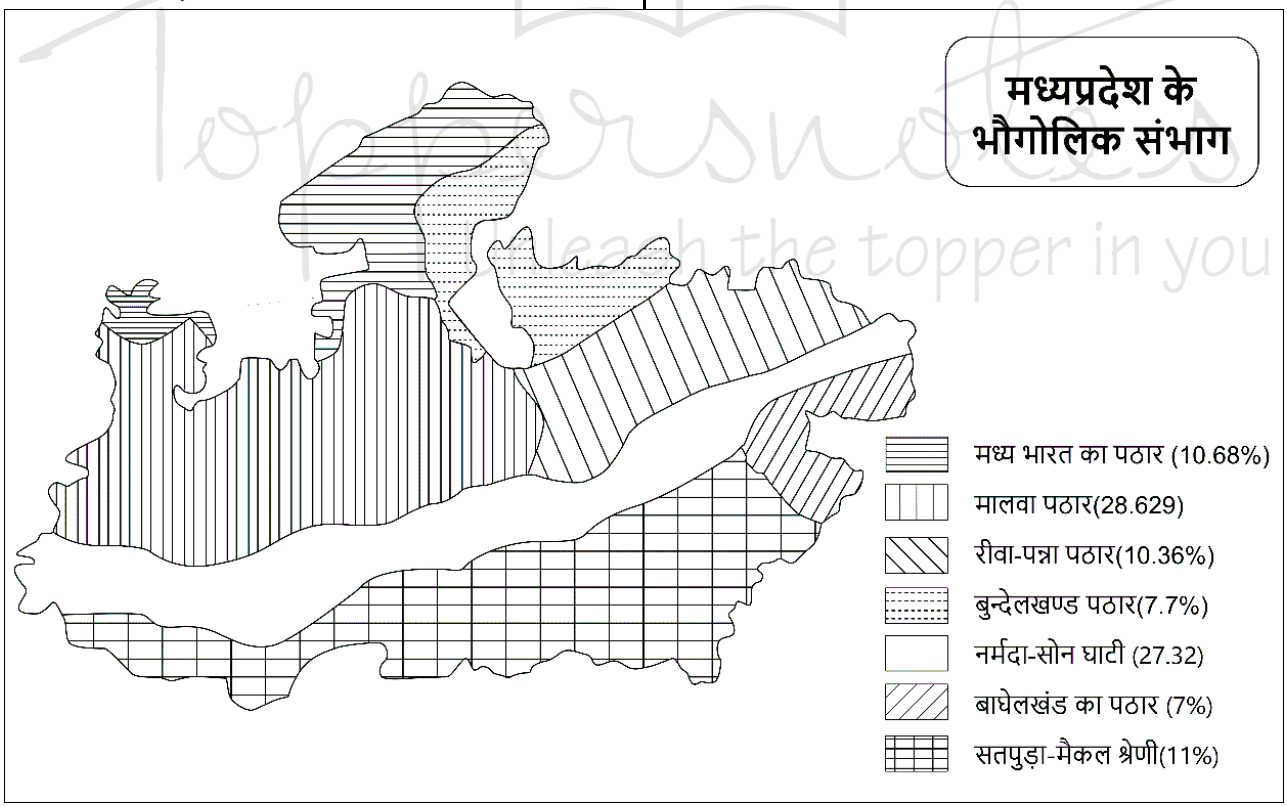

1. केन्द्रीय उच्च भूमि

- **स्थान:** नर्मदा-सोन घाटी और अरावली के बीच।
- यह आर्कियन, धारवाड़ और डेक्कन ट्रैप की चट्टानों से निर्मित है ।
- उत्तरी सीमा का निर्माण यमुना नदी द्वारा किया गया है।
- यह मध्य प्रदेश के संपूर्ण क्षेत्रफल के लगभग 2/3 भाग में फैला हुआ है

6 अध्याय

मध्य प्रदेश में जलवायु, ऋतुएँ और वर्षा

जलवायु

- किसी इलाके का किसी एक तरह का औसत मौसम अगर लम्बे समय से बना रहता है तो उसे उस इलाके की जलवायु कहा जाता है
- मध्य प्रदेश में मानसूनी प्रकार की जलवायु है।

MPPSC Pre – 2016, 2018

- जलवायु शब्द विभिन्न मौसमों में औसत तापमान, वर्षा और धूप के बारे में जानकारी का वर्णन करता है।
- कर्क रेखा मध्य प्रदेश के मध्य से होकर गुजरती है और जलवायु पर इसका बहुत प्रभाव पड़ता है।

MPPSC Pre – 2021

- अपने स्थान के कारण, मध्य प्रदेश में मानसूनी जलवायु की अरब सागर और बंगाल की खाड़ी दोनों शाखाओं से वर्षा होती है।

MPPSC Pre – 2021

जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

- **अक्षांशीय कारण**
  - दक्षिणी भाग भूमध्य रेखा के करीब स्थित है जिसके कारण मध्य प्रदेश में तापमान में छोटे मौसमी परिवर्तन होते हैं जबकि भूमध्य रेखा से दूर उत्तरी भाग में तापमान में अधिकतम भिन्नता का अनुभव होगा इसलिए यहाँ **उष्णकटिबंधीय जलवायु** होती है।
- **समुद्र से दूरी**
  - तटीय क्षेत्र आंतरिक क्षेत्रों की तुलना में ठंडे हैं इसलिए मध्य प्रदेश का तापमान मध्यम है यानी न तो बहुत गर्म और न ही अधिक ठंडा।
- **पर्वतीय कारण**
  - यहां विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत उच्च वर्षा का कारण बनते हैं।
- **स्थलरुद्ध स्थिति**
  - यह चारों ओर भूमि से घिरे होने के कारण यहाँ **तापमान का अंतर अधिक** है ।

मध्य प्रदेश के जलवायु क्षेत्र

- **उत्तरी मैदान:** यहाँ अत्यधिक गर्म गर्मी और बहुत ठंडी सर्दी के साथ चरम जलवायु परिस्थितियों का अनुभव किया जाता है।

MPPSC Pre – 2020

- **विंध्य का पहाड़ी क्षेत्र:** यहाँ अत्यधिक तापमान नहीं होता है।
- **बघेलखण्ड पठार:** कर्क रेखा इसके मध्य से होकर गुजरती है अंत: यहाँ मानसूनी जलवायु पायी जाती है।
- **नर्मदा घाटी:** यहाँ गर्मियों में अत्यधिक गर्मी और सर्दियों में मध्यम ठंड होती है।
- **मालवा पठार:** इसकी जलवायु मध्यम है जो न तो गर्मियों में बहुत गर्म होती है और न ही सर्दियों में बहुत ठंडी होती है फा-हेन ने इसे दुनिया की सबसे अच्छी जलवायु बताया है।

ऋतुएँ

भारतीय मौसम विभाग ने मध्य प्रदेश में 3 अलग-अलग ऋतुओं के संकेत दिए हैं।

- जो कि निम्न प्रकार हैं
  - **ग्रीष्म ऋतु** : मार्च से जून
  - **वर्षा ऋतु:** जून से अक्टूबर
  - **सर्दी का मौसम:** अक्टूबर-मार्च

1. ग्रीष्म ऋतु: मार्च से जून

- मध्य प्रदेश में गर्मियाँ मार्च के मध्य में शुरू होती हैं और जून में मानसून के प्रकोप के साथ समाप्त होती हैं।
- गर्मी के मौसम में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से भी ऊपर चला जाता है ।
- मध्य प्रदेश के दक्षिणी भाग (कर्क रेखा के दक्षिण) में अधिक सूर्यातप प्राप्त होता है।

2. वर्षा ऋतु: जून से अक्टूबर

- राज्य में भी मानसूनी वर्षा होती है।
- बंगाल की खाड़ी से चलने वाली हवाएँ लगभग पूरे मध्य प्रदेश को कवर करती हैं।
- वर्षा की तीव्रता पश्चिम की ओर और विशेषकर उत्तर-पश्चिम की ओर कम हो जाती है।
- सर्वाधिक वर्षा सुदूर पूर्व में होती है।
- पश्चिमी भाग में शीत ऋतु के दौरान पश्चिमी विक्षोभ के कारण वर्षा होती है जबकि इसी अवधि के दौरान पूर्वी भाग में साइबेरिया के मैदान से चलने वाली पूर्वी हवाओं के कारण वर्षा होती है।
- **रीवा जिले और सागर के बाद जबलपुर जैसे शहरों में सबसे अधिक वर्षा होती है।**
- जबकि इंदौर, रतलाम जिले, ग्वालियर और भोपाल में तुलनात्मक रूप से कम वर्षा होती है।
- पूरे राज्य में वर्षा की तीव्रता बहुत कम है तथा अधिकांश जिले सूखाग्रस्त हैं।

Unleash the topper in you